

## Chapter 6

### भ्रान्तो बालः

**2marks**

प्रश्न 1.

एकपदेन उत्तरं लिखत-(एक पद में उत्तर लिखिए-)

- (क) कः तन्द्रालुः भवति?
- (ख) बालकः कुत्र व्रजन्तं मधुकरम् अपश्यत्?
- (ग) के मधुसंग्रहव्याघ्राः अवभवन्?
- (घ) चटकः कया तृणशलाकादिकम् आददाति?
- (ङ) चटकः कस्य शाखायां नीडं रचयति?
- (च) बालकः कीदृशं श्वानं पश्यति?
- (छ) श्वानः कीदृशे दिवसे पर्यटसि?

उत्तराणि :

- (क) बालः।
- (ख) पुष्पोद्यानम्।
- (ग) मधुकराः।
- (घ) चञ्च्वा।
- (ङ) वटद्रुमस्य।
- (च) पलायमानम्।
- (छ) निदाघदिवसे।

प्रश्न 2.

अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -

(अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-)

- (क) बालः कदा क्रीडितुं अगच्छत्?
- (बालक कब खेलने के लिए निकल गया?)

उत्तरम् :

बालः विद्यालयगमनकाले क्रीडितुं अगच्छत्।

(बालक विद्यालय जाने के समय खेलने के लिए निकल गया।)

(ख) बालस्य मित्राणि किमर्थं त्वरमाणा अभवन्?  
(बालक के मित्र किसलिए शीघ्रता कर रहे थे?)

उत्तरम् :

बालस्य मित्राणि पाठं स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणाः अभवन्।  
(बालक के मित्र पाठ को याद करके विद्यालय जाने के लिए शीघ्रता कर रहे थे।)

(ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं केन कारणेन तिरस्कृतवान्।  
(भ्रमर ने बालक के बुलावे का किस कारण से तिरस्कार किया था?)

उत्तरम् :

मधुकरः मधुसंचये व्यस्त आसीत् अनेन सः तस्य आह्वानं तिरस्कृतवान्।  
(भ्रमर पुष्प-रस का संग्रह करने में व्यस्त था, इसलिए उसने उसके बुलावे का तिरस्कार किया।)

(घ) बालकः कीदृशं चटकम् अपश्यत्?  
(बालक ने किस प्रकार के चिड़े को देखा?)

उत्तरम् :

बालकः तृणानाददानं चटकं अपश्यत्।  
(बालक ने घास के तिनकों को ग्रहण किये हुए चिड़े को देखा।)

(ङ) बालकः चटकाय क्रीडनार्थं कीदृशं लोभं दत्तवान्?  
(बालक ने चिड़े को किस प्रकार का लालच दिया?)

उत्तरम् :

बालकः लोभं ददन् उवाच त्यज शुष्कं तृणं अहं ते स्वादुभोजनं दास्यामि।  
(बालक ने लालच देते हुए कहा-सूखे घास के तिनके को त्यागो, मैं तुम्हें स्वादिष्ट भोजन दूंगा।)

(च) खिन्नः बालकः श्वानं किम् अकथयत्?  
(दुःखी बालक ने कुत्ते से क्या कहा?)

उत्तरम् :

खिन्नः बालकः अकथयत्-रे मनुष्याणां मित्र! किं पर्यटसि वृथा? आगच्छ अत्र शीतलछायायां क्रीडावः।

(दुःखी बालक ने कहा-अरे मनुष्यों के मित्र ! व्यर्थ में क्यों घूम रहे हो? आओ, यहाँ शीतल छाया में हम दोनों खेलते हैं।)

(छ) भग्नमनोरथः बालः किम् अचिन्तयत्?

(नष्ट हुए मनोरथ वाले बालक ने क्या सोचा?)

उत्तरम् :

भग्नमनोरथः बालः अचिन्तयत्-जगति सर्वे निज निजकार्ये व्यस्ताः, अहमिव न कोऽपि वृथा कालक्षेपं नयति। अहमपि स्वोचितं करोमि।

(नष्ट हुए मनोरथ वाले बालक ने सोचा-संसार में सभी लोग अपने-अपने कार्य में व्यस्त हैं, मेरी तरह कोई भी व्यर्थ में समय नहीं बिता रहा है। मैं भी अपने लिए उचित कार्य को करता हूँ।)

प्रश्न 3.

निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत -

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।

रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि॥

उत्तर :

इस संसार में सफल जीवन हेतु प्रत्येक प्राणी को स्वोचित कर्म को नियमित रूप से करना होता है। सम्पूर्ण प्रकृति जैसे सूर्य का प्रतिदिन समय पर उदित होना, वक्षों का समय पर फलना-फलना, बादलों यही संकेत करता है कि इसी प्रकार मनुष्य को भी अपना-अपना कर्म समय पर नियमित रूप से करना चाहिए। क्योंकि जीव-जन्तु भी ऐसा ही करते हैं। जैसे प्रस्तुत श्लोक में कुत्ते का अपने कर्म (स्वामिभक्ति) को बड़ी तत्परता से करते हुए दिखाया गया है। वह रक्षा कर्म में थोड़ी भी असावधानी नहीं करता।

प्रश्न 4.

'भ्रान्तो बालः' इति कथायाः सारांशं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत।

उत्तर :

प्रस्तुत कहानी में एक भ्रान्त (पथभ्रष्ट) बालक को अपने अध्ययनकर्म की अपेक्षा खेलकूद में व्यर्थ में समय बिताते हुए दिखाया गया है कि संसार में जब अन्य सभी प्राणी, जीव-जन्तु भी अपने-अपने कर्म को तल्लीन होकर करते हैं तो मनुष्य को भी अपना कर्म अवश्य करना चाहिए, उसे समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। वह बालक कभी भ्रमर को अपने साथ खेलने के लिए आह्वान करता है, तो कभी चटक को, कभी कुत्ते को। परन्तु सभी स्वोचित कर्म में तल्लीन होने के कारण उसके साथ कोई भी खेलने को तैयार नहीं होता। थककर उसे यह एहसास होता है कि उसे भी अपने कर्म के प्रति प्रमाद नहीं करना चाहिए अपितु विद्यालय जाकर विद्या ग्रहण करनी चाहिए। और कुछ समय पश्चात् उसी बालक ने विद्वत्ता में सफलता (प्रसिद्धि) प्राप्त की तथा खूब धन-सम्पत्ति को भी प्राप्त किया।

प्रश्न 5.

स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -  
(क) स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।

उत्तरम् :

कीदृशानि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि?

(ख) चटकः स्वकर्मणि व्यग्रः आसीत्।

उत्तरम् :

चटकः कस्मिन् व्यग्रः आसीत्?

(ग) कुक्कुरः मानुषाणां मित्रम् अस्ति।

उत्तरम् :

कुक्कुरः केषां मित्रम् अस्ति?

(घ) सः महती वैदुषीं लब्धवान्।

उत्तरम् :

सः काम् लब्धवान्?

(ङ)

रक्षानियोगकरणात् मया न भ्रष्टव्यम् इति।

उत्तरम् :

कस्मात् मया न भ्रष्टव्यम् इति?

प्रश्न 6.

'एतेभ्यः नमः' इति उदाहरणमनुसृत्य नमः इत्यस्य योगे चतुर्थी विभक्तेः प्रयोगं कृत्वा  
पञ्चवाक्यानि रचयत।

उत्तरम् :

- नमः शिवायः।
- गुरवे नमः।
- शारदायै नमः।
- पित्रे नमः।
- परमात्मने नमः।

प्रश्न 7.

'क' स्तम्भे समस्तपदानि 'ख' स्तम्भे च तेषां विग्रहः दत्तानि, तानि यथासमक्षं लिखत -

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) दृष्टिपथम्	1. पुष्पाणाम् उद्यानम्
(ख) पुस्तकदासाः	2. विद्यायाः व्यसनी
(ग) विद्याव्यसनी	3. दृष्टेः पन्थाः
(घ) पुष्पोद्यानम्	4. पुस्तकानां दासाः

उत्तरम् :

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(क) दृष्टिपथम्	3. दृष्टेः पन्थाः
(ख) पुस्तकदासाः	4. पुस्तकानां दासाः
(ग) विद्याव्यसनी	2. विद्यायाः व्यसनी
(घ) पुष्पोद्यानम्	1. पुष्पाणाम् उद्यानम्

**4marks**

प्रश्न 1.

भ्रान्तः बालः कुत्र निर्जगाम?  
(भ्रमित बालक कहाँ निकल गया?)

उत्तर :

भ्रान्तः बालः क्रीडितुं निर्जगाम।  
(भ्रमित बालक खेलने के लिए निकल गया।)

प्रश्न 2.

सर्वेऽपि बालकाः किमर्थं त्वरमाणा बभूवुः?  
(सभी बालक किसलिए शीघ्रता कर रहे थे?)

उत्तर :

सर्वेऽपि बालकाः पूर्वदिनपाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणा बभूवुः।  
(सभी बालक पहले दिन का पाठ याद करके विद्यालय जाने के लिए शीघ्रता कर रहे थे।)

प्रश्न 3.

तन्द्रालुर्बालः एकाकी कुत्र प्रविवेश?  
(आलसी बालक अकेला ही कहाँ प्रवेश कर गया?)

उत्तर :

तन्द्रालुर्बालः एकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश।  
(आलसी बालक अकेला ही किसी बगीचे में प्रवेश कर गया।)

प्रश्न 4.

भ्रान्तः बालः पुष्पोद्यानं व्रजन्तं कं दृष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत?  
(भ्रमित बालक ने फूलों के बगीचे में घूमते हुए किसे देखकर उसको खेलने के लिए बुलाया?)

उत्तर :

भ्रान्तः बालः पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं द्रष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत।  
(भ्रमित बालक ने फूलों के बगीचे में घूमते हुए भौरे को देखकर उसे खेलने के लिए बुलाया।)

प्रश्न 5.

मधुकरः किम् अगायत्? (भौरे ने क्या गाया?)

उत्तर :

सः अगायत्-"वयं हिं मधुसंग्रहव्यग्रा" इति।  
(उसने गाया कि-"हम मधु संग्रह करने में व्यस्त हैं।")

प्रश्न 6.

भ्रान्तेन बालकेन कीदृशं चटकम् अपश्यत्? (भ्रमित बालक ने किस प्रकार के चिड़े को देखा?)

उत्तर :

भ्रान्तेन बालकेन चञ्च्वा तृणशलाकादिकमाददानं चटकम् अपश्यत्।  
(भ्रमित बालक ने चोंच में तिनकों, सींक आदि को ग्रहण किये हुए चिड़े को देखा।)

प्रश्न 7.

भ्रान्तः बालः चटकाय किं दातुं कथयति?  
(भ्रमित बालक चिड़े को क्या देने के लिए कहता है?)

उत्तर :

भ्रान्तः बालः चटकाय स्वादूनिभक्ष्यकवलानि दातुं कथयति।  
(भ्रमित बालक चिड़े को स्वादिष्ट खाने के लिए उपयुक्त कौर देने को कहता है।)

प्रश्न 8.

चटकः कस्मिन् कार्ये व्यग्रो बभूव?  
(चिड़ा.किस कार्य में व्यस्त हो गया?)

उत्तर :

चटकः नीडनिर्माणकार्ये व्यग्रो बभूव।  
(चिड़ा घोंसला बनाने के कार्य में व्यस्त हो गया।)

प्रश्न 9.

पक्षिणो केषु नोपगच्छन्ति?  
(पक्षी किनके पास नहीं जाते हैं?)

उत्तर :

पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति।  
(पक्षी मनुष्यों के पास नहीं जाते हैं।)

प्रश्न 10.

भ्रान्तः बालः कथं विनितमनोरथः अभवत्?

(भ्रमित बालक कैसे नष्ट मनोरथ वाला हो गया है?)

उत्तर :

सर्वैरेव निषिद्धः भ्रान्तः बालः विनितमनोरथः अभवत्।

(सभी के द्वारा निषेध करने से भ्रमित बालक नष्ट मनोरथ वाला हो गया।)

प्रश्न 11.

भ्रान्तः बालः विद्याव्यसनी भूत्वा किं किं लेभे?

(भ्रमित बालक ने विद्या-व्यसनी होकर क्या-क्या प्राप्त किया?)

उत्तर :

भ्रान्तः बालः विद्याव्यसनी भूत्वा महती प्रथां सम्पदं च लेभे।

(भ्रमित बालक ने विद्या-व्यसनी होकर महान् प्रसिद्धि एवं सम्पत्ति को प्राप्त किया।)

प्रश्न 12.

कः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम?

(कौन विद्यालय जाने के समय खेलने के लिए निकल गया?)

उत्तर :

भ्रान्तः बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम।

(भ्रमित बालक विद्यालय जाने के समय खेलने के लिए निकल गया।)

प्रश्न 13.

ऐते वराकाः कथं विरमन्तु? (ये बेचारे कैसे बने रहे?)

उत्तर :

ऐते वराकाः पुस्तकदासाः विरमन्तु।

(ये बेचारे पुस्तकों के दास बने रहे।)

प्रश्न 14.

के मम वयस्याः सन्तु? (कौन मेरे मित्र होंगे?)

उत्तर :

ऐते निष्कुटवांसिनः प्राणिनो मम वयस्याः सन्तु।

(ये वृक्ष की कोटरों में रहने वाले प्राणी मेरे मित्र होंगे।)

प्रश्न 15.

पुष्पोद्याने कः मधुकरं क्रीडाहेतोराह्वयत्?

(बगीचे में किसने भौरे को खेलने के लिए बुलाया?)



उत्तर :

पुष्पोद्याने भ्रान्तः बालः मधुकरं क्रीडाहेतुराह्वयत्।  
(बगीचे में भ्रमित बालक ने भौरे को खेलने के लिए बुलाया।)

प्रश्न 16.

'वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा' इति कोऽगायत्?  
(हम मधुसंग्रह में व्यस्त हैं' ऐसा किसने गाया?)

उत्तर :

इति मधुकरः अगायत्। (ऐसा भौरे ने गाया।)

प्रश्न 17.

रे मानुषाणां मित्र! किं पर्यटसि निदाघदिवसे?' इति कः कं प्रति कथयति?  
(अरे मनुष्यों के मित्र! गर्मी के दिन में क्यों घूम रहे हो?' ऐसा कौन किससे कहता है?)

उत्तर :

इति भ्रान्तः बालः श्वान प्रति कथयति। (ऐसा भ्रमित बालक कुत्ते से कहता है।)

प्रश्न 18.

स्वामी श्वानं कथं पोषयति?  
(स्वामी कुत्ते को कैसे पालता है?)

उत्तर :

स्वामी श्वानं पुत्रप्रीत्या पोषयति।  
(स्वामी कुत्ते को पुत्र के समान प्रेम से पालता है।)

प्रश्न 19.

अस्मिन् जगति प्रत्येकं कुत्र निमग्नो भवति?  
(इस संसार में प्रत्येक कहाँ संलग्न होता है?)

उत्तर :

अस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व-स्वकृत्ये निमग्नो भवति।  
(इस संसार में प्रत्येक अपने-अपने कार्य में संलग्न होता है।)

प्रश्न 20.

कोऽपि किम् न सहते?  
(कोई भी क्या सहन नहीं करता है?)

उत्तर :

कोऽपि वृथा कालक्षेपं न सहते।  
(कोई भी व्यर्थ में समय बिताना सहन नहीं करता है।)

## (ख) प्रश्न निर्माणम् -

प्रश्न 1.

रेखाङ्कितपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं करुत -

1. कश्चन भ्रान्तः बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम।
2. तेन सह क्रीडितुं कोऽपि वयस्येषु उपलभ्यमानः नासीत्।
3. सर्वेऽपि बालकाः विद्यालयगमनाय त्वरमाणाः बभूवुः।
4. तन्द्रालुर्बालः एकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेशः।
5. अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि।
6. अहं भूयः क्रुद्धस्य उपाध्यायस्य मुखं द्रक्ष्यामि।
7. एते निष्कुटवासिन एव प्राणिनो मम वयस्याः सन्तु।
8. सः पुष्पोद्याने व्रजन्तं मधुकरं दृष्टवान्।
9. बालः तं मधुकरं क्रीडाहेतोराह्वयत्।
10. मधुकरः द्विस्त्रिरस्याह्वानमेव न मानयामास।
11. ततो भूयो भूयः बालः हठम् आचरति।
12. अनेन कीटेन मिथ्यागर्वं कृतम्।
13. भ्रमितः बालः चटकमेकम् अपश्यत्।
14. ते स्वादूनि भक्ष्यकवलानि दास्यामि।
15. एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति।
16. सः बालः पलायमानं कमपि श्वानम् अवालोकयत्।
17. स्वामी मां पुत्रप्रीत्या पोषयति।
18. सर्वैरेवं निषिद्धः सः बालः विनितमनोरथः अभवत्।
19. अस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व-स्वकृत्ये निमग्नो भवति।
20. सः विद्याव्यसनी भूत्वा महतीं वैदुषीं लेभे।

उत्तर :

प्रश्न-निर्माणम् -

1. कश्चन भ्रान्तः बालः कदा क्रीडितुं निर्जगाम?
2. तेन सह क्रीडितुं कोऽपि केषु उपलभ्यमानः नासी?
3. के विद्यालयगमनाय त्वरमाणाः बभूवुः?
4. तन्द्रालुर्बालः एकाकी कुत्र प्रविवेश?
5. अहं कथं विनोदयिष्यामि?

6. अहं भूयः कस्य मुखं द्रक्ष्यामि?
7. एते के मम वयस्याः सन्तु?
8. सः पुष्पोद्याने कम् दृष्टवान्?
9. बालः कम् क्रीडाहेतोराह्वयत्?
10. मधुकरः किम् न मानयामास?
11. ततो भूयो भूयः बालः किम् आचरति?
12. अनेन कीटेन किम् कृतम्?
13. भ्रमितः बालः कम् अपश्यत्?
14. ते स्वादूनि कानि दास्यामि?
15. एते पक्षिणो केषु नोपगच्छन्ति?
16. सः बालः पलायमानं कम् अवालोकय?
17. स्वामी मां कथं पोषयति?
18. कथं सः बालः विनितमनोरथः अभवत्?
19. अस्मिन् जगति प्रत्येकं कुत्र निमग्नो भवति?
20. सः किम् भूत्वा महती वैदुषीं लेभे?

### (ग) कथाक्रम-संयोजनम् -

प्रश्न 1.

अधोलिखितक्रमरहितवाक्यानां कथाक्रमानुसारेण संयोजनं कुरुत -

1. न कोऽपि अहमिव वृथा कालक्षेपं सहते।
2. एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति।
3. भ्रान्तः बालः चिन्तयामास-अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि।
4. स्वोचितमहमपि करोमीति विचार्य सः पाठशालामुपजगाम।
5. सः मधुकरं क्रीडा हेतोराह्वयत्।
6. नमः एतेभ्यः यैर्मै तन्द्रालुतायां कुत्सा सम्पादिता।
7. चटकपोतः स्वकर्मव्यग्रो बभूव।
8. कुक्कुरः आह-स्वामिनो गृहे रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यम्।
9. अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि।
10. मधुकरः द्विस्त्रिरस्याद्वानमेव न मानयामास।

उत्तर :

वाक्य-संयोजनम्

- भ्रान्तः बालः चिन्तयामास-अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि।
- सः मधुकरं क्रीडाहेतोराह्वयत्।
- मधुकरः द्विस्त्रिरस्याद्वानमेव न मानयामास।
- अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि।
- चटकपोतः स्वकर्मव्यग्रो बभूव।
- एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति।
- कुक्कुरः आह-स्वामिनो गृहे रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यम्।
- न कोऽपि अहमिव वृथा कालक्षेपं सहते।
- नमः एतेभ्यः यैर्मै तन्द्रालुतायां कुत्सा समापादिता।
- स्वोचितमहमपि करोमीति विचार्य सः पाठशालामुपजगाम।

प्रश्न 2.

अधोलिखितक्रमरहितवाक्यानां क्रमसहितं संयोजनं कृत्वा लिखत -

1. सर्वैरेव निषिद्धः स बालः विचारं कृत्वा त्वरितं पाठशालामुपजगाम।
2. चटकः तु 'नीडः कार्यो बटद्रुशाखायां तद्यामि कार्येण' इत्युक्त्वा गतवान्।
3. ततः विद्याव्यसनी भूत्वा सः महती वैदुषीं प्रथां सम्पदं च लेभे।
4. सः एकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश।
5. खिन्नः बालकः परिक्रम्य कमपि श्वानमवालोक्तयत्।
6. मधुकरः अगायत् - 'वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा' इति।
7. सः पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत्।
8. कश्चन भ्रान्तः बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम।
9. त्यज शुष्कमेतत् तृणम् स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।
10. बालः अन्यतो दत्तदृष्टिश्चटकमेकं दृष्ट्वा अवदत्-'एहि क्रीडावः।'

उत्तर :

वाक्य-संयोजनम्

- कश्चन भ्रान्तः बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम।
- सः एकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश।
- सः पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत्।
- मधुकरः अगायत्-'वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा' इति।
- बालः अन्यतो दत्तदृष्टिश्चटकमेकं दृष्ट्वा अवदत्-'एहि क्रीडावः।'
- त्यज शुष्कमेतत् तृणम् स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।

- चटकः तु 'नीडः कार्यो बद्रुशाखायां तद्यामि कार्येण' इत्युक्त्वा गतवान्।
- खिन्नः बालकः परिक्रम्य कमपि श्वानमवालोक्तयत्।
- सर्वैरेव निषिद्धः स बालः विचारं कृत्वा त्वरितं पाठशालामुपजगाम।

### 7marks

1. भ्रान्तः कश्चन बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुम् अगच्छत् । किन्तु तेन सह केलिभिः कालं क्षेप्तुं तदा कोऽपि न वयस्येषु उपलभ्यमान आसीत्। यतः ते सर्वेऽपि पूर्वदिनपाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणाः अभवन् । तन्द्रालुः बालः लज्जया तेषां दृष्टिपथमपि परिहरन् एकाकी किमपि उद्यानं प्राविशत्।।

सः अचिन्तयत्-“विरमन्तु एते वराकाः पुस्तकदासाः। अहं तु आत्मानं विनोदयिष्यामि। सम्प्रति विद्यालयं गत्वा भूयः क्रुद्धस्य उपाध्यायस्य मुखं द्रष्टुं नैव इच्छामि। एते निष्कुटवासिनः प्राणिन एव मम वयस्याः सन्तु इति। अथ सः पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडितुम् द्वित्रिवारं आस्वयत्। तथापि, सः मधुकरः अस्य बालस्य आस्वानं तिरस्कृतवान् । ततो भूयो भूयः हठमाचरति बाले सः मधुकरः अगायत्-“वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा” इति।

शब्दार्थ प्रान्तः = भटका हुआ। वेलायां = समय पर। क्रीडितुम् = खेलने के लिए। केलिभिः = खेल द्वारा। कालं क्षेप्तुं = समय बिताने के लिए। वयस्येषु = मित्रों में से। यतः + ते = क्योंकि वे। त्वरमाणाः = शीघ्रता करते हुए। तन्द्रालुः = आलसी। एकाकी = अकेला। प्राविशत् = घुस गया। पुस्तकदासाः = पुस्तकों के दास। विनोदयिष्यामि = मैं मनोरंजन करूँगा। उपाध्यायस्य = गुरु के। निष्कुटवासिनः = वृक्ष के कोटर में रहने वाले। मधुकरं = भौरा। क्रीडितुम् = खेलने के निमित्त। आस्वयत् = बुलाया। भूयो भूयः = बार-बार। हठमाचरति = हठ करने पर। मधुसंग्रहव्यग्रा = पराग को संग्रह करने में लगे हुए।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'प्रान्तो बालः' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन 'संस्कृत प्रौढपाठावलिः' नामक ग्रन्थ से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश इस गद्यांश में बताया गया है कि भटका हुआ बालक मित्रों के मना कर देने पर खेलने के लिए भौरे को बुलाता है।

सरलार्थ-एक भटका हुआ बालक पाठशाला जाने के समय खेलने के लिए चला गया। किन्तु उसके साथ खेलों में समय बिताने के लिए कोई भी मित्र उपस्थित नहीं था। वे सभी पहले दिन

के पाठों को स्मरण करके विद्यालय जाने की शीघ्रता से तैयारी कर रहे थे। आलसी बालक लज्जावश उनकी दृष्टि से बचता हुआ अकेला ही उद्यान में घुस गया।

वह सोचने लगा ये बेचारे पुस्तक के दास वहीं रुकें। मैं तो अपना मनोरंजन करूँगा। क्रोधित गुरुजी का मुख मैं बाद में देखूँगा। वृक्ष के खोखलों में रहने वाले ये प्राणी (पक्षी) मेरे मित्र बन जाएँगे।

तब उसने उस उपवन में घूमते हुए भँवरे को देखकर दो-तीन बार खेलने के लिए पुकारा। उस भँवरे ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। तब बार-बार हठ करने वाले उस बालक के प्रति उसने गुनगुनाया-‘हम तो पराग एकत्र करने में व्यस्त हैं।

भावार्थ-भटका हुआ बालक पढ़ाई से मुख मोड़कर प्रसन्न रहने की कोशिश करता है। मित्रों के मना कर देने पर वह भँवरे को अपने साथ खेलने के लिए बुलाता है, परन्तु वह अपनी व्यस्तता के कारण आने से मना कर देता है।

2. तदा स बालः ‘अतं भाषणेन अनेन मिथ्यागवितेन कीटेन’ इति विचिन्त्य अन्यत्र दत्तदृष्टिः चञ्चा तृणशलाकादिकम् आददानम् एकं चटकम् अपश्यत्, अवदत् च-“अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि। एहि क्रीडावः। एतत् शुष्कं तृणं त्यज स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि” इति। स तु “मया ववमस्य शाखायां नीडं कार्यम्” इत्युक्त्वा स्वकर्मव्यग्रोः अभवत्। तदा खिन्नो बालकः एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति। तद् अन्वेषयामि अपरं मानुषोचितम् विनोदयितारम् इति विचिन्त्य पलायमानं कमपि श्वानम् अवलोकयत्। प्रीतो बालः तम् इत्थं समबोधयत्रे मानुषाणां मित्र! किं पर्यटसि अस्मिन् निदाघदिवसे? इदं प्रच्छायशीतलं तरुमूलम् आश्रयस्व। अहमपि क्रीडासहायं त्वामेवानुरूपं पश्यामीति। कुक्कुरः प्रत्यवदत् यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य। रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि ॥ इति।

अन्वय यः मां पुत्रप्रीत्या पोषयति तस्य स्वामिनः गृहे रक्षानियोग कारणात् मया ईषदपि न भ्रष्टव्यम्।

शब्दार्थ-मिथ्यागवितेन = झूठे गर्व वाले। अन्यत्र दत्तदृष्टिः = दूसरी ओर देखते हुए। चञ्च्चा = चौंच से। आददानम् = ग्रहण करते हुए। अवदत् = कहा। अयि = आओ। चटकम् = चिड़िया। स्वादूनि = स्वादिष्ट। भक्ष्यकवलानि = खाने के ग्रास। ते = तुम्हें। नीडं = घोंसला। वटदुमस्य शाखायां = बरगद के पेड़ की शाखा पर। यामि = मैं जा रहा हूँ। स्वकर्मव्यग्रः = अपने काम में व्यस्त। खिन्नः = दुःखी। अन्वेषयामि = मैं ढूँढता हूँ। विनोदयितारम् = मनोरंजन करने वाले

को। पलायमानं = भागते हुए को। श्वानम् = कुत्ते को। सम्बोधयत् = सम्बोधित किया।  
पर्यटसि = घूम रहे हो। निदाघदिवसे = गर्मी के दिन में। आश्रयस्व = आश्रय लो। क्रीडासहायं  
= खेल में सहयोगी। कुक्कुरः = कुत्ते ने। अनुरूपम् = अपने अनुरूप। रक्षानियोगकरणान्न =  
रक्षा के कार्य में लगे होने से। ईषदपि = थोड़ा-सा भी। भ्रष्टव्यम् = हटना चाहिए।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ  
'भ्रान्तो बालः' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन 'संस्कृत प्रौढपाठावलिः' नामक ग्रन्थ से  
किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश इस गद्यांश में बताया गया है कि उस बालक ने अपने साथ खेलने के लिए  
चटका एवं कुत्ता दोनों को बुलाया परन्तु उन्होंने मना कर दिया।

सरलार्थ तब उस बालक ने अपने मन में 'व्यर्थ में घमण्डी इस कीड़े (भौरे) को छोड़ो' ऐसा  
सोचकर दूसरी तरफ देखते हुए एक चिड़े को चोंच से घास-तिनके आदि उठाते हुए देखा।  
वह उससे बोला-"अरे चिड़िया के शावक! (बच्चे) तुम मुझ मनुष्य के मित्र बनोगे। आओ हम  
खेलते हैं। इस सूखे तिनके को छोड़ो। मैं तुम्हें स्वादिष्ट खाने वाली वस्तुओं के ग्रास दूंगा।"  
मुझे बरगद के पेड़ की शाखा पर घोंसला बनाना है। अतः मैं काम से जा रहा हूँ। ऐसा  
कहकर वह (चिड़ा) अपने काम में व्यस्त हो गया।

तब दुःखी बालक ने कहा ये पक्षी मनुष्यों के निकट नहीं आते। अतः मैं मनुष्यों के योग्य किसी  
अन्य मनोरंजन करने वाले को खोजता हूँ। ऐसा सोचकर भागते हुए किसी कुत्ते को देखा।  
प्रसन्न होकर उस बालक ने कहा हे मनुष्यों के मित्र! इतनी गर्मी के दिन में व्यर्थ क्यों घूम रहे  
हो। इस घनी और शीतल छाया वाले वृक्ष का आश्रय ले लो। मैं भी खेल में तुम्हें उचित साथी  
समझता हूँ। कुत्ते ने कहा

जो पुत्र के समान मेरा पोषण करता है। उस स्वामी के घर की रक्षा के कार्य में लगे होने से  
मुझे थोड़ा-सा भी नहीं हटना चाहिए।

भावार्थ-पक्षी एवं कुत्ते के अपने-अपने कार्य में लगे रहने की भावना इस बात की शिक्षा देती है  
कि सभी प्राणी किसी-न-किसी कार्य में व्यस्त रहते हैं।

3. सर्वैः एवं निषिद्धः स बालो भग्नमनोरथः सन्- 'कथमस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व-स्वकार्ये निमग्नो  
भवति। न कोऽपि मामिव वृथा कालक्षेपं सहते। नम एतेभ्यः यैः मे तन्द्रालुतायां कुत्सा  
समापादिता।

अथ स्वोचितम् अहमपि करोमि इति विचार्य त्वरितं पाठशालाम् अगच्छत्।  
ततः प्रभृति स विद्याव्यसनी भूत्वा महतीं वैदुषर्षी प्रथां सम्पदं च अलभत।

शब्दार्थ-सर्वैः एवं = सभी के द्वारा, इस प्रकार। निषिद्धः = मना किया गया। भग्नमनोरथः = टूटी हुई इच्छाओं वाला। कालक्षेपं = समय की हानि। तन्द्रालुतायां = आलस्य में। कुत्सा = घृणा का भाव। समापादिता = उत्पन्न कर दी। त्वरितं = जल्दी से। विद्याव्यसनी = विद्या में रुचि रखने वाला। वैदुषर्षी = विद्वत्ता की। प्रथां = प्रसिद्धि। सम्पदं = सम्पत्ति। अलभत = प्राप्त कर ली।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत विषय की पाठ्य-पुस्तक 'शेमुषी प्रथमो भागः' में संकलित पाठ 'भ्रान्तो बालः' में से उद्धृत है। इस पाठ का संकलन 'संस्कृत प्रौढपाठावलिः' नामक ग्रन्थ से किया गया है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस गद्यांश में बताया गया है कि भ्रमर, चिड़ा एवं कुत्ते की भावनाओं से प्रभावित होकर बालक विद्याध्ययन की ओर आकृष्ट होता है।

सरलार्थ-सभी के द्वारा इस प्रकार मना कर दिए जाने पर टूटे हुए मनोरथ वाला वह बालक सोचने लगा-इस संसार में प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्तव्य में व्यस्त है। कोई भी मेरी तरह समय नष्ट नहीं कर रहा है। इन सबको प्रणाम, जिन्होंने आलस के प्रति मेरी घृणाभाव उत्पन्न कर दिया। अतः मैं भी अपना उचित कार्य करता हूँ। ऐसा सोचकर वह शीघ्र ही पाठशाला चला गया। तब से विद्या में रुचि रखने वाला होकर उसने विद्वत्ता, कीर्ति तथा धन को प्राप्त किया।

भावार्थ-भँवरे, चिड़े एवं कुत्ते ने अपने-अपने कर्तव्य के प्रति रुचि दिखाकर भटके हुए बालक के मन में आलस्य के प्रति घृणा का भाव भर दिया। इस कारण वह बालक इन तीनों प्राणियों को प्रणाम करता है। विद्याव्यसनी बनकर वह विद्वान् यश तथा धन को प्राप्त करता है।

### अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत  
(एक पद में उत्तर लिखिए)
- (क) कः तन्द्रालुः भवति?
- (ख) बालकः कुत्र व्रजन्तं मधुकरम् अपश्यत्?
- (ग) के मधुसंग्रहव्याग्राः अवभवन्?



(घ) चटकः कया तृणशलाकादिकम् आददाति?

(ङ) चटकः कस्य शाखायां नीडं रचयति?

(च) बालकः कीदृशं श्वानं पश्यति?

(छ) श्वानः कीदृशे दिवसे पर्यटसि?

उत्तराणि:

(क) बालः,

(ख) पुष्पोद्यानम्,

(ग) मधुकराः,

(घ) चञ्च्वा,

(ङ) वटदुमस्य,

(च) पलायमानम्,

(छ) निदाघदिवसे।

2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए)

(क) बालः कदा क्रीडितुं अगच्छत्? ।

(ख) बालस्य मित्राणि किमर्थं त्वरमाणा अभवन्?

(ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं केन कारणेन तिरस्कृतवान्?

(घ) बालकः कीदृशं चटकम् अपश्यत्?

(ङ) बालकः चटकाय क्रीडनार्थं कीदृशं लोभं दत्तवान्?

(च) खिन्नः बालकः श्वानं किम् अकथयत्?

(छ) भग्नमनोरथः बालः किम् अचिन्तयत् ?

उत्तराणि:

(क) बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं अगच्छत्।

(ख) बालस्य मित्राणि विद्यालयगमनार्थं त्वरमाणा अभवन् ।

(ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं तिरस्कृतवान् यतः सः मधुसंग्रहे व्यग्रः आसीत्।

(घ) बालकः चञ्च्वा तृणशलाकादिकम् आददानं चटकम् अपश्यत्।

(ङ) बालकः चटकाय स्वादूनि भक्ष्यकवलानि दानस्य लोभं दत्तवान्।

(च) खिन्नः बालकः श्वानम् अकथयत् मित्र! त्वम् अस्मिन् निदाघदिवसे किं पर्यटसि?

प्रच्छायशीतलमिदं तरुमूलं आश्रयस्व । अहं त्वामेव अनुरूपं क्रीडासहायं पश्यामि।

(छ) भग्नमनोरथः बालः अचिन्तयत् अस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व-स्वकार्ये निमग्नः भवति। कोऽपि अहमिव वृथा कालक्षेपं न सहते। अतः अहमपि स्वोचितं करोमि।

3. निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत  
(निम्नलिखित श्लोक का भावार्थ हिन्दी भाषा अथवा अंग्रेज़ी भाषा में लिखिए)  
यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।  
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि ॥

उत्तराणि:

प्रस्तुत श्लोक में कुत्ते में भी कर्तव्य-पालन की भावना को बताया गया है। जहाँ उसे पुत्र के समान प्रेम मिलता है और उसका भली-भाँति पालन-पोषण होता है, वहाँ उसे रक्षा के कर्तव्य से जरा भी पीछे नहीं हटना चाहिए। कुत्ते की इसी भावना से प्रभावित होकर बालक विद्याध्ययन की ओर आकृष्ट होता है।

4. “भ्रान्तो बालः” इति कथायाः सारांशं हिन्दीभाषया आङ्ग्लभाषया वा लिखत।  
(भ्रान्तो बालः’ इस कथा का सारांश हिन्दी भाषा अथवा अंग्रेज़ी भाषा में लिखिए।)

उत्तराणि:

एक भटका हुआ बालक पाठशाला जाने के समय खेलने के लिए चल पड़ा। उसने अपने मित्रों से भी खेलने आने को कहा, परन्तु सभी मित्र विद्यालय जाने की शीघ्रता में थे। इसलिए किसी ने भी उसकी बात न मानी। उपवन में जाकर सबसे पहले उसने भौरे से खेलने के लिए कहा, किन्तु उसने पराग एकत्रित करने में अपनी व्यस्तता बताई। तब उसने चिड़े को स्वादिष्ट खाद्य वस्तुएँ देने का लालच देकर खेलने को कहा, किन्तु उसने भी घोंसला बनाने के कार्य में अपनी व्यस्तता बताकर खेलने से इन्कार कर दिया। इसके बाद उस बालक ने कुत्ते से खेलने को कहा। कुत्ते ने भी रक्षा कार्य में लगे होने के कारण अपनी व्यस्तता प्रकटे की। इस प्रकार नष्ट मनोरथ वाले उस बालक ने अन्त में यह समझ लिया कि समय नष्ट करना उचित नहीं है। सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। अतः उसे भी अपनी पढ़ाई का कर्तव्य पूरा करना चाहिए। तभी से वह पढ़ाई के कार्य में जुट गया। वह शीघ्र

v. अधोलिखित प्रश्नानाम् चतुषु वैकल्पिक-उत्तरेषु उचितमुत्तरं चित्वा लिखत  
(निम्नलिखित प्रश्नों के दिए गए चार विकल्पों में से उचित उत्तर का चयन कीजिए)

1. क्रीडितुम् कः अगच्छत्?

(i) कुक्कुरः

(ii) श्वानः

(iii) भ्रान्तः बालः

(iv) मधुकरः

उत्तरम्:

(iii) भ्रान्तः बालः

2. चटकपोतः कस्य मित्रं भविष्यति?

- (i) भ्रान्त बालस्य
- (ii) मानुषस्य
- (iii) श्वानस्य
- (iv) कुक्कुरस्य

उत्तरम्:

- (i) मानुषस्य

3. अस्मिन् जगति प्रत्येक कस्मिन् निमग्नो भवति?

- (i) स्व-स्वकृत्ये
- (ii) अन्यस् कार्य
- (iii) मित्र कार्य
- (iv) गृह कार्य

उत्तरम्:

- (i) स्व-स्वकार्ये

4. बालः कदा क्रीडितुम् अगच्छत् ?

- (i). भ्रमणाय
- (iii) अन्यस् कार्य
- (iii) गृह कार्य
- (iv) पाठशालागमन

उत्तरम्:

- (iv) पाठशालागमन

5. सर्वैः निषिद्धः कः भग्नमनोरथः अभवत् ?

- (i) बालः
- (ii) चटका
- (iii) कपोतः
- (iv) श्वानः

उत्तरम्:

- (i) बालः

6. 'कोऽपि' इति पदे कः सन्धिविच्छेदः?

- (i) को + ऽपि
  - (ii) कः + अपि
  - (iii) का + अपि
  - (iv) को + पि
- उत्तरम्:
- (ii) कः + अपि

7. 'दत्तदृष्टिः' इति पदे कः समासः?

- (i) कर्मधारयः
  - (ii) अव्ययीभावः
  - (iii) बहुव्रीहिः
  - (iv) द्वन्द्वः
- उत्तरम्:
- (iii) बहुव्रीहिः

8. 'नमः' इति पदस्य योगे का विभक्तिः ?

- (i) प्रथमा
  - (ii) पञ्चमी
  - (iii) तृतीया
  - (iv) चतुर्थी
- उत्तरम्:
- (iv) चतुर्थी

9. 'पुस्तकदासाः' इति पदे कः समासः?

- (i) कर्मधारयः
  - (ii) बहुव्रीहिः
  - (iii) तत्पुरुषः
  - (iv) अव्ययीभावः
- उत्तरम्:
- (iii) तत्पुरुषः

10. 'कुसुमानां' पदस्य पर्यायवाची पदं लिखत

(i) पादपानाम्

(ii) पुष्पाणाम्

(iii) वृक्षाणाम्

(iv) वनानाम्

उत्तरम्:

(ii) पुष्पाणाम्

**भ्रान्तो बालः (भटका हुआ बालक) Summary in Hindi**

**भ्रान्तो बालः पाठ-परिचय**

प्रस्तुत पाठ "संस्कृत-प्रौढपाठावलिः" नामक ग्रन्थ से सम्पादित किया गया है। इस कथा में एक ऐसे बालक का चित्रण है, जिसका मन अध्ययन की अपेक्षा खेल-कूद में लगा रहता है।

एक भटका हुआ बालक पाठशाला जाने के समय खेलने के लिए चल पड़ा। उसने अपने मित्रों से भी खेलने आने को कहा, .. परन्तु सभी मित्र विद्यालय जाने की शीघ्रता में थे। इसलिए किसी ने भी उसकी बात न मानी। उपवन में जाकर सबसे पहले उसने

भौरे से खेलने के लिए कहा, किन्तु उसने पराग एकत्रित करने में अपनी व्यस्तता बताई। तब उसने चिड़े को स्वादिष्ट खाद्य वस्तुएँ देने का लालच देकर खेलने को कहा, किन्तु उसने भी घोंसला बनाने के कार्य में अपनी व्यस्तता बताकर खेलने से इन्कार कर दिया। इसके बाद उस बालक ने कुत्ते से खेलने को कहा। कुत्ते ने भी रक्षा कार्य में लगे होने के कारण अपनी व्यस्तता प्रकट की।

इस प्रकार नष्ट मनोरथ वाले उस बालक ने अन्त में यह समझ लिया कि समय नष्ट करना उचित नहीं है। सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। अतः उसे भी अपनी पढ़ाई का कर्तव्य पूरा करना चाहिए। तभी से वह पढ़ाई के कार्य में जुट गया। वह शीघ्र पाठशाला चला गया।